Journal Literary Aesthetics
Volume No: 12, Issue No: 2, Year: 2025 (July-December)
PP: 99-104
ISSN: 2347-8705
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 5.8)
Journal Website www.literaryjournal.org

अनुसंधानात्मक संस्मरण 'महाकुम्भ'

प्रवीण कुमार झा

शोधार्थी, विश्विद्यालय मैथिली विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्विद्यालय, दरभंगा

प्रो. अशोक कुमार मेहता

शोध पर्यवेक्षक, विश्विद्यालय मैथिली विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्विद्यालय, दरभंगा

साहित्यमे युग आ परिस्थिति पर आधारित अनुभव आ अनुभूति केर अभिव्यक्ति सेहो निहित रहैछ, जे अभिव्यक्ति साहित्यकार केर हृदयक माध्यमसँ होइत अछि। ईहो निर्विवाद सत्य अछि जे कोनो साहित्यकार अपन युग–वृक्ष कें अपन अंतर्रात्माक आवाजसँ पटबैत छथि, जाहिसँ आबय वाला पीढ़ी ओहि साहित्य रूपी मधुर फल केर सहज आस्वादन कऽ सकथि।

ईहो कम महत्वपूर्ण नहि जे साहित्य आ समाजक सम्बन्ध अन्योन्याश्रित अछि। साहित्य समाजक प्रतिबिम्ब होइछ। कारण एकर सृजन जन–जीवन केर धरातल पर होइछ। समाजक सभ शोभा, ओकर श्रीसम्पन्नता आ मान–मर्यादा साहित्ये पर अवलम्बित रहैछ। सामाजिक शक्ति आकि सजीवता, सामाजिक अशान्ति आकि निर्जीवता, सामाजिक सभ्यता आकि असभ्यता सभक निर्णायक एकमात्र साहित्ये अछि।

मैथिली भाषा साहित्यक एकटा एहने साहित्यकार भेलाह पंचानन मिश्र।

मैथिली साहित्यक अन्वेषणात्मक प्रवृत्ति सँ युक्त शोध दृष्टिसंँ सम्पन्न निरन्तर संलग्न आ विविध आयाम सँ परिपूर्ण पंचानन मिश्रक बहुआयामी रचना सभ मिथिला आ मैथिली लेल सदैव संदर्भालेखक रूपमे उद्धृत अछि। ई पढ़ाकू प्रवृत्तिक छलाह आ जा धरि कोनो विषय केर पूर्ण अध्ययन आ शोध नहि क' लैत छलाह ता धरि ओहि विषय पर अपन लेखनी नहि चलबैत छलाह। एक प्रकारें हुनक आलेख वा पोथी, सभमे किछु नव जनतब भेटैत अछि, लेखकीय नव दृष्टि सँ पाठक परिचित होइत छथि।

पंचा बाबूक लेखनीक विशेषता छनि जे हिनक रचनामे लोक चेतनाक विशद अध्येताक हिनक रूप देखार होइत अछि। हिनक पुस्तक 'महाकुंभ' सेहो ओहिसँ फराक नहि, ई पुस्तक हुनक एकटा उत्कृष्ट यात्रा संस्मरण अछि, जकर प्रत्येक पृष्ठमे किछु एहन बात स्वाभाविक रूपसँ भेटैत अछि जे एहिसँ पूर्व अज्ञात रहल अछि। कहबाक अभिप्राय जे हुनक ई पोथी अपन विषयक नव दृष्टिएं सर्वथा समीक्षा करैत नजरि अबैत अछि आ एहि पोथीक इहो विशेषता सर्वमान्य जे हमरा बुझने एहि विषय पर एतेक प्राचीन आ अर्वाचीन शीर्षकमे संकलित एखन धरि कोनो पोथी अपन भाषामे प्रकाशित नहि भेल अछि।

लेखकीय आ परिशिष्ट मिलाकऽ ई पोथी कुल उन्नैस टा शीर्षक अन्तर्गत बांटल गेल अछि। हालांकि लेखक अपन लेखकीयमे एकरा एकगोट यात्रा-वृतान्त कहैत छथि। [1]

© Copyright @ Authors

ISSN: 2347-8705
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 5.8)
Journal Website www.literaryjournal.org

मुदा हमरा बुझने ई एकटा शोध थिक। जकरा पूर्ण करबा लेल लेखक यात्रा केलनि अछि।

पहिल अध्यायमे प्रयाग महाकुम्भ मेलाक विशद आ व्यापक वर्णन कयल गेल अछि। जाहिमे प्रयाग स्टेशनक बदलैत मुंह- कानसंँ महाकुम्भ स्थल धरि पहुंँचबाक वर्णन भेटैत अछि। कुम्भ मेला रौनकक वर्णन सेहो कयल गेल अछि आ एतुका जे मुख्य स्नान मकर संक्रान्ति, माघी अमावस्या, वसंत पंचमी आ शिवराति दिन होइत अछि, ताहिमे कोन तरहक इंतजाम होइत अछि, गंगोत्री धामक पवित्र देवछड़ीक दर्शन लेल कोना श्रद्धालु आफन तोड़ैत रहैत छथि, तकर जीवंत चित्रण एहि अध्याय मध्य कयल गेल अछि। [2] लेखक कुम्भकें प्राचीन वर्ण व्यवस्थाक पुनरीक्षण आ पुनर्व्यवस्था मानैत छथि, जे सत्य अछि। बदलैत परम्पराक दर्शन सेहो एतऽ भेटैत अछि। जेना जातीय दुर्गंधक आवरणमे लपटायल भारतीय समाजमे जखन कोनो दलित संन्यासीक सम्मान होइत अछि तऽ महाकुम्भ सन परम्परा अत्यधिक प्रासंगिक भऽ उठैत अछि। संगहि किछु अद्भुत दृश्य सेहो एहि अध्यायमे उपस्थित भेल अछि। जेना साधु संग जानवरक सधुक्कड़ प्रवृत्ति। एकरा संगतिक असरि कहल जाय आकि गंभीर प्रशिक्षण मानी वा एहिमे देवत्व स्थापित करी से प्रत्येक मस्तिष्कक फराक-फराक सोच भऽ सकैत अछि। संन्यासी लोकनिक अखाड़ा, दसनामी परम्परा आदिक चर्च अनभिज्ञ लोकनिकें एहिसँ पूर्ण भिज्ञ करबामे सक्षम अछि। संगहि धार्मिक परम्परामे गीतक केहन अनुपम स्थान अछि, से महाकुम्भ यात्राक क्रममे लेखक अनुभव केलनि आ तकर उल्लेख कऽ पाठककेँ सेहो गीतनादक महत्वसंँ अवगत करौलनि अछि। शोधकर्त्ताक एकटा समूहके एहि क्षेत्रमे घूमब घूरियायव एहि बातक प्रमाण थिक जे एखन बहुत किछु एहन छैक जे अन्वेषित अनुसंधानित नहि भऽ सकल अछि।

दोसर अध्यायमे शाही स्नानक विशद वर्णन भेटैत अछि। [3] शाही स्नान चारि अवसर पर कएल जाइत अछि, जकर उल्लेख एहि आलेखक पूर्वमे कैल गेल अछि । मकर संक्रान्तिमे शाही स्नान करबाक जे परम्परा छैक, तकर पाछाँ मकर संक्रान्तिक महत्वे प्रमुख अछि। एहि दिन गंगाजीकें भगीरथ द्वारा पृथ्वी पर आनल गेल छलनि। [4] शाही स्नानमे की पुरुष? की महिला लोकनि? की भारतीय? की विदेशी? सभ तरहक लोक भेटैत छथि जे वैश्वीकरणक धार्मिक पथकेँ रेखांकित करैत अछि। यद्यपि एहि आयोजनके आधुनिकता नहि बकसलक आ तें लेखक ठाम-ठाम धर्म आ धार्मिक आचरणकें नव रंग-ढंगमे देखै छथि। मुदा सभकिछु बदललाक बादो लोकक विश्वास सुरक्षित आ संरक्षित छैक। तें जखन नागा संन्यासीक स्पर्शित बलुआही माटि उठेबाक क्षण अबैत अछि तऽ लोक अपन आधुनिक विचारकें कातक माटिक प्राप्ति लेल दौड़ि जाइत छथि। मेलामे संचार क्रान्तिक प्रभाव सेहो दृष्टिगत होइत अछि। जे कतौसँ अनसोहांत नहि अछि।

पोथीक तेसर अध्यायमे नागा संन्यासीक सम्पूर्ण चित्रण कयल गेल अछि। जाहिमे अनेक नव जानकारी प्राप्त होइत अछि। मैथिलीमे नागा संन्यासी पर एहिसँ विशिष्ट आलेख एखनधरि पढ़वा लेल नहि भेटल अछि। नागा संन्यासी बनबाक घोषणा महाकुंभहि केर

© Copyright @ Authors

ISSN: 2347-8705
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 5.8)
Journal Website www.literaryjournal.org

अवसर पर कयल जाइत अछि। सात चरणमे ई प्रक्रिया पूर्ण होइत अछि। नागा संन्यासी लोकनिक जीवनमे भस्म केर बहुत महत्व होइत छनि आ भस्म कोना तैयार कयल जाइछ, से जनतब अत्यंत रोचक अछि। [5] संगहि नागा साधुक संस्कार कोना होइत अछि तकर विशद वर्णन कयल गेल अछि। जे लेखकक गहन निरीक्षण आ व्यापक जिज्ञासासँ उत्पन्न सवालक रूपें एहि पोथीमे द्रष्टव्य होइत अछि। एकटा रोचक तथ्य आओरो छैक जे हमरा लोकनि एखन धरि सोरह शृंगारक चर्च आ वर्णन सुनैत रहलहुँ अछि। मुदा सत्रहो शृंगार होइत छैक, से एहि पोथिएसँ ज्ञात भेल। [6] नागा लोकनि सत्रह शृंगार करैत छथि। एकर अतिरिक्त अखाड़ामे कोनो बहुरूपिया नहि आबि सन्हिया जाय ताहि लेल कोड वर्डक प्रयोग सेहो कयल जाइत छैक। जकरा नागा लोकनिक भाषामे टकसार कहल जाइत छैक। नागा लोकनि कुल दस गोट पदवी पबैत छथि। एहि प्रकारें एहि अध्यायमे नागा लोकनिक संपूर्ण जीवन ओ कार्य-कलापक समधानल वर्णन कयल गेल अछि।

चारिम अध्याय संन्यासी लोकनि पर केन्द्रित अछि। जाहिमे हुनक जीवन ओ अन्यान्य गतिविधि सभक वर्णन भेटैत अछि। लेखक अपन एहि यात्रामे अनेको संन्यासी लोकनिसँ परिचित होइत छथि। मुदा, लेखककें एकटा बातक बड़ क्षोभ भेलनि जे मिथिलाक संन्यासी लोकनि सेहो बाहर जा अपन भाषाक परित्याग कऽ दैत छथि आ मैथिली भाषासँ परहेज करैत छथि। ई बात लेखककें बहुत आहत करैत छनि। [7]

पाँचम अध्याय संन्यासिनी लोकनि पर केन्द्रित अछि। जाहिमे संन्यासिन बनवाक सम्पूर्ण विधिकें अत्यंत सूक्ष्मतासँ रेखांकित कयल गेल अछि। हुनका लोकनिक सात नियम उल्लेख भेटैत अछि। जकर पालन कऽ कियो संन्यासिनी बनि सकैत छथि। लेखककें भांति-भांतिक संन्यासिनी सभ भटैत छथिन, कियो कोनो हाकिमक बेटी तऽ कियो राधे मां। स्त्री द्वारा पिण्डदानक संदर्भमे एकटा महत्वपूर्ण बात एहि अध्यायमे भेटैत अछि जे जयऽ गृहस्थक शास्त्रीय विधानक अनुसार गयामे स्त्रीकें पिण्डदानक अधिकार प्राप्त छनि. ओतहि एकगोट संन्यासिनी सभ स्थान पर पिण्डदानक अधिकारी थिकी। मुदा संन्यासिनी लोकनिक मध्य विचरण करैत लेखक एहि निष्कर्ष धरि पहुंँचैत छथि जे समयक अनुसार सभ किछु हाइटेक भेल जा रहल अछि। चाहे ओ पुरुष भक्त होथि वा स्त्री भक्त, चाहे ओ संन्यासी होथि वा संन्यासिनी । मायाक प्रति आकर्षण बढ़ल अछि आ से महाकुम्भोमे देखार भऽ रहल अछि। [8]

लेखक आगां भू-समाधिक वर्णन करैत छथि। जे पाठककें एकगोट अलौकिक संसारक यात्रा करबैत अछि। समाधि लैत देखब आ ओकर विभिन्न रूप सभसंँ परिचित होयब जतबे लेखकमे छगुन्ता भाव जगौने हैत, ततबे पाठक सेहो एहि तरहक भाव संग यात्रा करैत छथि। वस्तुतः भू-समाधि सेहो एकगोट योग साधने थिकै। मुदा, ई सभसंँ संभव नहि भऽ सकैत अछि। एहिसंँ सांस पर अधिकार पाओल जा सकैत अछि। नागा बाबाजी सभक लेल ई बहुत सहज क्रिया अछि।

© Copyright @ Authors

ISSN: 2347-8705
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 5.8)
Journal Website www.literaryjournal.org

ई पोथी यद्यपि एकटा महत्वपूर्ण धार्मिक आस्था आ प्रक्रिया पर केन्द्रित पोथी थिक मुदा एकर सभसं पैघ विशेषता ई अछि जे एकर विभिन्न अध्यायमे सामाजिक सरोकार सहजहिं झलकि उठैत अछि। मेहतरानि नामित अध्याय पाठककें एहि लेल चौंकबैत अछि जे कोनो धर्म अथवा धर्मसंँ जुड़ल यात्रा पोथीमे एहि तरहक प्रयोग पहिले बेर देखबामे अबैत अछि, जे लेखक समाजक ओहि वर्गक कार्यकलापकें सेहो अपन विषयवस्तु बनौलनि अछि। जे अदौसँ समाजमे उपेक्षित रहल अछि आ जकर गणना सदैव नेपथ्यक मनुक्खक रूपमे होइत रहल अछि। मेहतरानिक स्थिति ओ परिस्थितिक सहज आ सटीक - वर्णन एहि अध्यायमे कयल गेल अछि आ सामाजिक परिवर्तनक दृष्टिएं हुनक मूल्यांकन कयल गेल अछि। सुलभ इंटरनेशनलक आगमनसंँ पूर्व हुनक कतेक दयनीय स्थिति छल से सहजहिं अकानल जा सकैत अछि। जकर स्पर्श आ गोहत्या एकहि रंगक अपराधक श्रेणीमे अबैत छल, से आइ मुख्यधारामे आबि गेल छथि। ई सामाजिक प्रगतिक एकगोट ठोसगर उदाहरण थिक।

पोथीमे एकटा आओरर रोचक अध्याय अछि जाहिमे पाकिस्तानक चारि गामसंँ आयल लोक सभक वर्णन अछि, जे महाकुम्भमे अपन उपस्थिति दर्ज करैत छथि। ई सभ सिंध प्रान्तक वासी छलाह जे तें सिंधी छथि। ई सभ मंडली संग आयल रहथि आ एतय रहि शाही स्नान केला आ फेर पूजापाठ आ प्रवचन आदिमे संलग्न होइत गेलाह। लेखकक लेल पाकिस्तानक चारि गामसंँ आयल ई श्रद्धालु लोकनि पाकिस्तानक प्रति एकटा भरोस सेहो स्थापित करैत बुझना जाइत अछि जे कतबो किछु होमय, पड़ोसीक सहभागिता होयबे करैत छैक।

पोथीमे संक्षिप्तेमे मुदा आत्महत्या पर केन्द्रित एकटा अध्याय सेहो अछि जाहिमे त्रिवेणीमे आत्महत्याक संदर्भमे जानकारी देल गेल अछि। एतय आत्महत्या करबाक सेहो एकगोट दीर्घ परम्परा रहल अछि। वस्तुतः धार्मिक दृष्टिएं एतय आत्महत्या करब धर्मविरूद्ध नहि मानल जाइत अछि। आत्महत्या वा कही तऽ आत्मत्यागक उल्लेख अबुल फजलक 'आइने अकबरी' मे सेहो भेटैत अछि। [9] संगहि एपीग्राफिया इंडिकामे प्रयागमे शरीर त्यागबाक धार्मिक व्यवस्थाक जानकारी सेहो देल गेल अछि। आनो आन पोथी सभमे एकर उल्लेख आयल अछि। कहबाक अभिप्राय जे एतय आबि अपन प्राण उत्सर्ग करबा हेतु लोक सभ इच्छुक रहैत छलाह । मुदा आब ई परम्परा समाप्त भऽ गेल अछि। मुदा, लेखक अनुसंधान कऽ एहि परंपराक संदर्भमे पाठककें जनतब देलनि अछि।

तहिना एहि महाकुम्भक मध्य इलाहाबाद स्टेशन पर भगदड़ मचि गेला सँ अनेक लोग मारल गेला, से लेखककें बहुत आहत केलकनि। ई घटना कोनो एकबेर नहि भेल अछि, अपितु अनेक बेर भेल अछि। मुदा, प्रशासन आदिक सक्रियता जतबा हेबाक चाही ओतेक नहि रहबाक कारणें एहि तरहक दुर्घटना पर पूर्णविराम नहि लागल अछि ।

महाकुम्भमे मीडियाक सक्रियता सेहो उल्लेखनीय रहल अछि। प्रायः सभ तरहक इलेक्ट्रानिक मीडियाक जमघट ओतय लागल रहैत अछि । लेखक सेहो सभ मीडियाक अंतर्कथा बुझबाक लेल ओकर इर्द-गिर्द घूमैत रहैत छथि। एहि घूमबाक क्रममे मार्क

© Copyright @ Authors

ISSN: 2347-8705
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 5.8)
Journal Website www.literaryjournal.org

दुलीसंँ भेंट होइत छनि, जे एकटा उपलब्धि सन लगलनि। दरअसल, मीडिया सेन्टरमे घूमबाक क्रममे लेखक भारतीय ओ विदेशी पत्रकारिताक कार्यपद्धतिक अंतरकें स्पष्ट अनुभव केलनि आ विदेशी पत्रकारक सक्रियता हुनक विश्वसनीयता कायम करबामे सक्षम बनबैत अछि। लेखककें पत्रकारिताक ई स्वरूप रुचिगर लगलनि।

तीर्थ स्थल पर निशांपानक प्रचलन सेहो देखबामे अबैत अछि। महाकुम्भमे लेखककें गांजाक चलन बेसी देखबामे अयलनि। साधु-संतक मध्य गांजा पीबाक बेसी चलन देखाय पड़ल छलनि। लेखक एहूमे अपन शोध-यात्रा जारी रखलनि। जे गांजा भरत से आगि नहि लगाओत, दोसरकें दहिने हाथमे चीलम थम्हाओत। चीलममे गांजा पझाइत छोड़ि देब अनुचित बुझत आदि आदि। संगहि एहि अध्यायमे लेखक ओहि स्थान पर पसरल अपराधक मायाजालक सेहो चर्च करैत छथि, जाहिमे नकली नोटक धंधासंँ लऽ कऽ नशाखुरानी धरिक काज कयल जाइत अछि।

एतबे नहि लेखक द्वारा कुम्भसंँ संबंधित अद्यावधि प्रकाशित पुस्तकक सेहो विवरण ताकल गेल आ उचित स्थान पर एकर विवरण लेखक द्वारा देल गेल अछि। [10] जे आगामी अनुसंधान आ शोध कार्यकें मंजिल धरि पहुंचाबैमे साधक बनत। लेखक एहि पोथीक एक-एक अध्यायक लेखनमे अति सूक्ष्म दृष्टि आ गहन खोजी प्रवृतिक संग उपस्थित भेल छथि। कुम्भ गेला पर पोथी नहि लिखने छथि, अपितु पोथी लिखबा लेल कुम्भ गेल छथि, तेहन प्रतीत होइत अछि। लेखक द्वारा गृहकार्य पूर्ण भेला उपरान्ते स्थल पर जा संदर्भित विषयक अध्ययन करबाक लक्षण देखबामे अबैत अछि।

प्रयागक दर्शनीय स्थलक वर्णन सेहो कयल गेल अछि, जाहिमे अक्षयवट पर विशेष प्रकाश देल गेल अछि। अक्षयवटक इतिहास, पौराणिक ओ धार्मिक मान्यता आदिकें पूर्ण रूपेण स्पष्ट कयल गेल अछि। जे ज्ञानमे वृद्धि करैत अछि, अपन इतिहास आ धर्मसंँ परिचित करबैत अछि। एकर अतिरिक्त विभिन्न मंदिर सभक जनतब दैत छथि, जाहिमे पातालपुरी मंदिर, बिन्दुमाधव मंदिर, नागबासुकी मंदिर, सरस्वती कूप आदिक वर्णन भेटैत अछि।

प्रयागमे लेखक अमरनाथ झाक स्मरण सेहो करैत छथि आ हुनक ध्यान अबिते ओ विभिन्न स्थल पर जा हुनक कृतित्व ओ व्यक्तित्वक खोज करैत छथि। एहि लेल ओ इलाहाबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय सेहो जाइत छथि। मुदा, ओ ओतय संँ प्रसन्नचित्त भऽ आपस नहि अबैत छथि। वैश्वीकरण आ भूमंडलीकरण शिक्षा आ विद्वताक नव परिभाषा गढ़लक आ बजारवाद तकरा स्वीकृति प्रदान केलक । एहिमे सुच्चा विद्वान कतहु पाछाँ छूटि गेल प्रतीत होइत छथि। अमरनाथ झाक विभिन्न रोचक प्रसंग लेखककें स्मरण होइत चलि जाइत छनि, मुदा वर्तमान संदर्भमे ओकर प्रासंगिकता नहि देखि क्षोभ होइत छनि।

इलाहाबाद आ महाकुम्भक यात्राक दौरान हुनका अनेक विभूतिलोकनिक स्मरण होइत चलि जाइत छनि- हरिवंशराय बच्चन आ जयकान्त मिश्रक अनेक पारिवारिक ओ सामाजिक प्रसंग मोन पड़ैत रहैत छनि। मुदा, मोनमे जागल सभ प्रश्नक उत्तर लेखककें भेटिये गेल छनि से बात नहि। अनेक प्रश्न एहन रहल, जकर प्रसंगे ओ अद्यावधि उत्तर

© Copyright @ Authors

ISSN: 2347-8705
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 5.8)
Journal Website www.literaryjournal.org

नहि पाबि सकल रहथि। जेना महाकुम्भ कहिया सं ँ प्रारम्भ भेल, कुम्भक आयोजन प्रति बारह बरख पर हेबाक परंपराक संबंधमे स्पष्ट जानकारी नहि भेटि सकलनि । यद्यपि एहि संदर्भमे अनेक पोथी छैक, मुदा से कोनो निश्चित वर्ष सूचित नहि करैत अछि।

अस्तु, 'महाकुम्भ' प्रयाग कुम्भक सम्यक विवरण प्रस्तुत करैत पोथीक नाम थिक, जकर लेखनक क्रममे लेखकक बौद्धिक क्षमता कठिन परिश्रम अनुसंधानात्मक प्रवृति आ शोधकर्मक क्षमता जगजियार भऽ उठैत अछि आ तें ई एकटा अपरिहार्य आ आवश्यक पोथी बनि गेल अछि । वर्णनक क्रममे यद्यपि कतहु-कतहु कोनो विषयक बेसी विस्तार अवश्य भऽ गेल अछि। मुदा एहिसँ पोथीक पठनीयता पर कोनो असरि नहि पड़ैत अछि।

संदर्भ:

1. मिश्र पंचानन, महाकुम्भ, नवारम्भ, पटना: 63, एम.आई.जी. हनुमान नगर, पिन-800020/ मधुबनी: वार्ड नं.-2, विवेक पुरम्, प्रथम संस्करण (2017)
2. पुस्तकसँ अंश: [1] [3] [5] [6] [7] [8] [9] [10]
3. पुस्तकसँ किछु अंश: [2]
4. एहि संदर्भमे अन्य स्थल पर उल्लेख भेल जनतब: [4]

© Copyright @ Authors